चतुर्थ अध्याय

"कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याएँ"

चतुर्थ अध्याय

कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याएँ

4·1 प्रास्ताविक

4·2 आर्थिक समस्याएँ

4·3 राजनीतिक समस्याएँ

4·4 निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याएँ

4·1 प्रास्ताविक

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करने में कमलेश्वरजी की विशेष भूमिका रही है। उन्होंने समकालीन समाज की सच्चाइयों को अपने उपन्यासों के व्दारा प्रस्तुत किया है। कमलेश्वरजी ने अक्सर अपने युग की समस्याओं को समझा है, सोचा है और फिर उपन्यासों में चित्रित किया है। कमलेश्वरजी के प्रत्येक उपन्यास में कोई-न-कोई समस्या उजागर होकर सामने आती है। इस दृष्टि से उनके सारे उपन्यास कहलाये जाते है। कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों में राजनीतिक तथा साम्प्रदायिक आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया है।

कमलेश्वरजी के उपन्यासों में सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं के साथ-साथ आर्थिक समस्या का भी चित्रण हुआ है। आर्थिक परिस्थिति से जर्जर होने के कारण निम्न-मध्यवर्ग के लोगों को बहुतसी कठिनाइयों का सामना करना पडता है। शहरों में रहनेवाले मध्यवर्ग के लोगों को आर्थिक अभाव के कारण जीने के लिए काफी संघर्ष करना पडता है। कमलेश्वरजी ने आज के जीवन में भ्रष्टाचार और राजनीति ने इस प्रकार प्रवेश किया है कि कहीं पर भी, चाहते हुए भी सामान्य व्यक्ति उससे मुक्ति नहीं पाता।

कमलेश्वरजी के "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "लौटे हुए मुसाफिर", "डाक बंगला", "तीसरा आदमी", "आगामी अतीत" और "समुद्र में खोया हुआ आदमी" आदि उपन्यासों में सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं का चित्रण दिखाई

देता है। इनमें से कई उपन्यासों में प्रेम समस्या, वेश्या समस्या तथा साम्प्रदायिक समस्याएँ भी उजागर होती है। "लौटे हुए मुसाफिर" में "साम्प्रदायिक समस्या" स्पष्टतः दिखाई देती है और इसके अंतर्गत कहीं-कहीं आर्थिक समस्या का भी चित्रण हुआ है। "आगामी अतीत" उपन्यास में प्रथमतः प्रेम समस्या और बाद में वेश्या समस्या भी निर्माण हो चुकी है। "डाक बंगला" में भी असफल प्रेम समस्या दिखाई देती है। "तीसरा आदमी" उपन्यास में पति-पत्नी के बीच जब कोई तीसरा आदमी आता है तो उनके संबंध किस तरह टूट जाते हैं इसका चित्रण इस उपन्यास में किया है। कमलेश्वरजी के खास तौर से "समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास में ज्यादह से ज्यादह आर्थिक समस्या का ही चित्रण किया है। आर्थिक अभाव के कारण परिवार को कई कठिनाइयों को झेलना पड़ता है। इसी तरह "समुद्र में खोया हुआ आदमी" में कमलेश्वरजी ने आर्थिक दृष्टि से जर्जर एक परिवार की त्रासदी का चित्रण किया है। एक तरह से देखा जाय तो इस उपन्यास में पारिवारिक समस्या दिखाई देती है।

4·2 आर्थिक समस्याएँ :-

कमलेश्वरजी ने खास तौर से "समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास में आर्थिक समस्या का ही चित्रण किया है। इस उपन्यास में सभी जगह आर्थिक अभाव के कारण किस प्रकार की समस्याएँ सामने आती हैं इसका यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास में पारिवारिक समस्या प्रधान बन चुकी है। पारिवारिक समस्या के अंतर्गत पति-पत्नी समस्या, कोटुंबिक समस्या, विवाह समस्या, शिक्षा की समस्या, नौकरी की समस्या आदि बहुत सारी समस्याएँ आती हैं। और इनमें से बहुतसी समस्याएँ "समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

कमलेश्वरजी ने खास तौर से "समुद्र में खोया हुआ आदमी" में एक मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण बहुत सारी आर्थिक समस्याओं का सामना करना पडता है इसे ध्वनित किया है। इस उपन्यास में श्यामलाल एक मध्यवर्गीय परिवार के आदमी हैं। वे दिल्ली इसलिए चले आते हैं कि यहाँ आकर

कोई काम मिल गया तो परिवार को चलाना आसान होगा। पर ऐसा नहीं हो पाता। जिन उमीदों को लेकर वे चले आये थे, वे सभी उम्मीदे समाप्त हो जाती हैं। नौकरी की बहुत ही तलाश करके नौकरी मिलती नहीं इसी कारण परिवार की देखभाल करना उनके लिए बहुत ही मुश्किल होता है। यहाँ श्यामलाल को अपने परिवार की देखभाल करने के लिए नौकरी नहीं मिलती यह नौकरी की सबसे पहली समस्या इस उपन्यास में स्पष्टतः दिखाई देती है। उसी समय असल में अपना शहर छोड़ते समय श्यामलाल ने कभी यह भी नहीं सोचा था कि दिल्ली पहुँचने के एक साल के भीतर ही उन्हें नौकरी से अलग कर दिया जाएगा। फिर वह इतने कंगाल हो जायेंगे कि न अपने शहर लौटे जाएंगे और न यहाँ ही पैर जमा पाएंगे। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नौकरी की समस्या निर्माण होने के कारण एक परिवार किस तरह टूट जाता है यह दिखाई देता है।

श्यामलाल के नौकरी के बारे में जो अरमान थे, सपने थे पर वे केवल सपने सपने ही रह जाते हैं। एक ट्रान्सपर्ट कंपनी में क्लर्क की नौकरी एक साल करते हैं पर कुछ ही दिनों बाद इस क्लर्क की नौकरी से भी उन्हें हाथ धोना पड़ता है। ऐसी हालत में परिवार को संभालना उनके लिए बहुत ही मुश्किल होता है और उन्हें यह भी पसंद नहीं है कि उनके बेटे और बेटी नौकरी करें। जब उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ा उसी समय वे ट्रान्सपर्ट कंपनी में काम करते थे। कंपनी के शेड में से सामान की चोरी हुई और दूसरे दिन श्यामलाल बर्खास्त कर दिए गए। जो हर्जाना हुआ वह कंपनी को भरना पड़ा इसी कारण श्यामलाल की एक महीने की तनख्वाह भी काट ली गई। उसी महिने से मकान का किराया चढ़ना शुरू हो गया। इसी कारण मकान मालिक आकर गालियाँ भी देने लगें। दूसरी समस्या किराये की समस्या निर्माण हो गयी। श्यामलाल कंपनी की नौकरी खो बैठते हैं। इस दुर्घटना के बाद ही उपन्यास की शुरूआत होती है। इसी दुर्घटना के बाद ही उनकी सभी आकांक्षाएँ खंडित हो जाती हैं।

इस उपन्यास में श्यामलाल, बीरन, समीरा, तारा इन सबकी अपनी-अपनी परेशानियाँ हैं। श्यामलाल कुछ बनने के अरमान लिए दिल्ली चले आते हैं, पर बात बन नहीं पाती। ऐसी हालत में उनका एक मात्र सहारा "बीरन" ही है। उस पर ही उनकी सारी आशाएँ टिकी हुई है। अपने बेटे पर उनका पूरा विश्वास है कि एक दिन बीरन पढ़ लिखकर कमाने लायक बनेगा मगर ऐसा तो होता ही नहीं। उससे पहले श्यामलाल के घर में हरबंस का आना-जाना शुरू हुआ था। उसकी छोटीसी दूकान थी। श्यामलाल को नौकरी से अलग कर दिया था उन दिनों कोई सहारा नहीं रह गया। इसी कारण हरबंस श्यामलाल को घर-घर जाकर ऑर्डर बुक करने का काम देता है। हरबंस श्यामलाल के घर आते ही दोनों लडकियाँ समीरा और तारा हरबंस के इर्द-गिर्द घूमने लगती तब श्यामलाल को बर्दाश्त न होता, लेकिन रम्मी बहुत ही समझदार है। हरबंस के आते ही वह बीरन को दौडाकर दूध या नींबू मंगाती और वह चाय या शिंकजवी बनाती है। आर्थिक परिस्थिति कमजोर होने के कारण रम्मी हरबंस का स्वागत करती है ताकि वह बहुत खुश हो जाय।

हरबंस का आना-जाना श्यामलाल को खलता था। तारा हरबंस को तरह-तरह के बेल-बूटों के नमूने बनाने में मदद करती थी। समीरा भी आस-पास के घरों से कपडे मांग लाती और नये-नये नमूने उतरवा देती। श्यामलाल को लगा कि बेल-बूट ट्रेस करने का काम हरबंस करता था वह वे खुद भी कर सकते हैं। समीरा और तारा उनकी मदद करें तो क्यों न अपना काम शुरू दें ? लेकिन तारा और समीरा कोई न कोई बहाना करके मदद करने के लिए इन्कार कर देती हैं। वे चीखने लगे, "मैं सब समझता हूँ, ये लडकियाँ मुझे चलाती हैं। अब आए वह हरबंस घर में..."[1]

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि श्यामलाल की नौकरी चले जाने के कारण उन्हें परिवार में कौन पूछता भी नहीं, उनका कोई सुनता भी नहीं, वे सिर्फ एक फालतू चीज की तरह रह जाते हैं, जिसे फेंका नहीं जा सकता, सिर्फ बर्दाश्त किया जाता है। आर्थिक अभाव के कारण अपनी पत्नी रम्मी और दो बिटियाँ

तारा और समीरा उन्हें कुछ भी नहीं पूछती। वे स्वयं का निर्णय स्वयं लेती है।

ऐसी हालत में हरबंस श्यामलाल को पूछता है कि तारा को बूटे उतारने के लिए हमारे यहाँ रख दीजिए मुझे भी एक हाथ की और जरूरत है। तारा चालीस रुपये माहवार पर हरबंस के यहाँ काम करने लगी। यह सब आर्थिक अभाव के कारण। श्यामलाल को यह बिल्कुल पसन्द नहीं आता। हरबंस दूकान बंद करके उसे पहुँचाने आता था। रम्मी और हरबंस का अपना हिसाब चलने लगा था, श्यामलाल को जैसे की इसका कोई एहसास नहीं था।

आगे चलकर रम्मी और श्यामलाल इन दोनों में झगडे शुरू होते हैं। श्यामलाल कहते हैं कि हरबंस मेरी बेइज्जती करता है। आज दूकान पर उसने सब को चाय के लिए पूछा, मुझसे नहीं। यहाँ रोज उसके लिए चाय-शर्बत बनता है।"

श्यामलाल कुछ कमाने लायक नहीं हैं इसलिए उसे बाहर के लोग भी पूछते नहीं और पत्नी रम्मी भी नहीं। वे भीतर से टूट जाते हैं। श्यामलाल का अस्तित्व खंडित होने लगा।

ऐसी हालत में उनकी आशा का केन्द्रबिन्दु है" बीरन "। घर की स्थिति को देखकर उन्हें हमेशा ऐसा लगता है कि बीरन जब कमाने लायक होगा तब यह बिखरता हुआ कंगाल साम्राज्य नष्ट हो जायेगा। श्यामलाल की सारी आशाएँ बीरन पर ही टिकी हुई थी। उनके बीरन के बारे में ही बहुत से अरमान हैं। लेकिन वे सब धुल में मिल जाते हैं।

बीरन कालेज चला जाता है। तारा को हरबंस लेके जाता है। श्यामलाल सूट-बूट पहने सो रहे थे। तारा को हरबंस आकर ले गया था। समीरा ने अपनी तरफ देखा तो गंदे नाखून बढ़ गये और बाहों पर अजीब सा रूखापन···इसके विपरीत तारा के बक्से में अब ताला रहने लगा। उसके कपडे अलग टंगते थे। उसके नहाने के लिए सबको इंतजार करना पडता था। यह सब किस कारण तो वह माहवार चालिस रूपये कमाती थी। ऐसे में बीरन को किसी भी बात की दखल

नहीं लेता। उसे जैसे किसी से कुछ लेना देना नहीं है। कॉलेज से आता चाय पीकर बाहर जाता।

बीरन को हमेशा अपने बाबूजी की मायूसी और बेबसी सताती रहती। उसे पता था कि माँ और बाबूजी उसे अपना पेट काट-काट कर पढ़ा रहे थे। वह हमेशा इसी कोशिश में था कि उसके कारण घर में कोई परेशानी न हो। उपर्युक्त उदाहरण से शिक्षा की समस्या का भी चित्रण स्पष्ट हो जाता है। अच्छी-खासी नौकरी बीरन को मिल जाय इसी कारण वह अपना पेट काटकर बीरन को पढ़ाते हैं, ताकि अच्छी खासी नौकरी मिल जाय। आर्थिक अभाव के कारण यहाँ दो समस्याएँ हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती हैं एक शिक्षा की समस्या और दो नौकरी की समस्या।

यह सब ध्यान में रखते हुए बीरन नौ-सेना में दाखिल हो जाता है। और घर की स्थिति धीरे-धीरे सुधरने लगती है। नौकरी मिलते ही परिवार में खुशी की एक लहर दौड जाती है। बीरन जहाज का एक बड़ा अफसर बन जाता है। उसके चले जाने के बाद तो सारा घर जैसे खाली-खाली सा लगने लगता है।

बीरन को अपने घर की खस्ता हालत का ध्यान है। तभी तो वह अपनी जिम्मेदारी निभाने में कोई कसर नहीं रखता। वह हर महिने पिताजी के नाम पैसे भेजता रहता है। पर कुछ समय के उपरान्त बीरन का मनीऑर्डर आना बंद हो जाता है। बीरन का मनीऑर्डर नही, घर में एक पैसा भी नहीं, समीरा की इम्तहान की फीस जमा करने के लिए रूपये चाहिए थे। जाननेवालों ने उधार देना बंद कर दिया था। समाज भी कैसा होता है जिसके पास है उसीको ही पूछता है। आर्थिक अभाव के कारण एक परिवार की किस प्रकार हालत होती है इसका यथार्थ वर्णन इस उपन्यास में है। आगे चलकर मँहगाई बढ़ गई। घर का खर्च चलाना श्यामलाल के लिए दुश्वार हो गया। श्यामलाल जब कोई नया काम शुरू करते थे, तब कोई-न-कोई रूकावट हमेशा आती ।

इधर तारा यह सोच लेती है कि अपनी सारी मुश्किले विवाह के बाद ही खत्म हो सकती हैं। इसलिए वह हरबंस के साथ शादी करके निकल जाती है। यहाँ हमें विवाह की भी समस्या दिखाई देती है।

हरबंस उनके लिए एक आधार-सा बन जाता है। उन्हीं दिनों हरबंस का आना-जाना शुरू था। हरबंस श्यामलाल की मदद करता है। हरबंस की छोटी-सी दूकान थी, जहाँ वह गिलाफों, चादरों, पेटीकोटों, ब्लाउजों और साड़ियों वगैरह पर फूल-पत्तियाँ ट्रेस करके देता था। जिन दिनों श्यामलाल नौकरी से अलग हुए थे, उन दिनों कोई सहारा भी नहीं रह गया था। तारा बीस बरस की थी, समीरा सत्रह की और बीरन था चौदह साल का। लडकियाँ तो घर में बैठी थी पर बीरन दसवीं में पढ़ रहा था। हरबंस ने श्यामलाल को घर-घर जाकर आर्डर बुक करने का काम दे दिया था। श्यामलाल घर-घर जाकर पूछ आते कि लडकियों-बहुओं को बूटे तो नहीं काढने हैं। घरों के नंबर नोट कर लाते···फिर हरबंस अपनी साइकिल से बेलबूटों के नमूने लेकर एक-एक घर पहुँचाता और बहनों, बहुओं के गिलाफों पर "मधुर स्वप्न", "गुड लक" या रूमालों पर गुलाब का बूटा या पेटीकोटों पर फलदार सुराहियों के डिझाइन ट्रेस कर आता। कमीशन श्यामलाल को भी देता। यहाँ भी आर्थिक समस्या की दिखाई देती है।

श्यामलाल की बेटी तारा घर की आर्थिक हालत को देखकर काम करना पसंद करती है और दूसरे दिन से तारा चालीस रूपये माहवार पर हरबंस के यहाँ काम करने लगी थी। श्यामलाल को यह पसंद नहीं है इसी कारण श्यामलाल को लगने लगा कि जैसे घर को सिर्फ चालीस रूपये माहवार की जरूरत थी। पैटर्न हाऊस में जब से तारा ने जाना शुरू किया, श्यामलाल भी किसी न किसी बहाने वहीं जमें रहते। तारा को यह रखवाली पसंद नहीं थी। दिन-ब-दिन घर की हालत बिगडती जाती है। घर के प्रत्येक सदस्य को लगता है कि श्यामलाल एक फालतू चीज बन गये हैं। इसी कारण श्यामलाल के जीवन में अँधेरे के सिवा कुछ नहीं था। इसका फायदा परिवार के सभी लोग उठाते हैं।

दिल्ली जैसी जगह आदमी को अपना पेट पालने के लिए हजार काम थे पर उन्हें किसी काम में पैसा नहीं मिला। काम तो कोई भी शुरू किया जा सकता था, पर हमेशा बीच में ऐसे दिन आते थे कि काम अपने आप ठप्प हो जाता था, क्योंकि उसे जिलाए रखने के लिए पैसा नहीं होता था और थोडा बहुत उधार लिया हुआ पैसा खत्म भी हो जाता था। घर की चीजे धीरे-धीरे उठती गयी थी। जब जरूरत पडती तब रम्मी चुपके से समीरा को घर का कोई बर्तन या अन्य कोई चीज देकर गिरवी रखनेवाले सरदार के यहाँ भगा देती। बेटे का समुद्र में खो जाना यह आर्थिक परिस्थिति के कारण बहुत बुरी बात है। आर्थिक चिंता के कारण श्यामलाल बहुत ही निरीह हो जाते हैं। यकायक वह बहुत बूढे लगने लगे थे। एक शाम तो हलवाई ने उन्हें रूपये लौटाने के लिए बहुत बेइज्जत कर दिया, तब वह हाथ जोड़कर खडे हो गये थे और कहते हैं कि पैसों की कमी होने के कारण हलवाई के सामने मजबूर होना पड़ता है। श्यामलाल का परिवार बड़ी अजीब-सी उलझनों से गुज़र रहा था। उनके परिवार को एक तरह से जीना मुश्किल हो गया था।

रम्मी के मन में अपनी बेटी समीरा के बारे में बार-बार यह समस्या आती है कि समीरा का कुछ और इन्तजाम कर दिया जाय। ऐसे घर में जवान बेटी का रहना बहुत खतरनाक था। इससे विवाह समस्या भी इस उपन्यास में स्पष्टतः दिखाई देती है।

रम्मी रात होते ही अजमल-खाँ रोड पर जाती और बची हुई सस्ती सब्जी में से कुछ खरीद लाती। आटा गूंथकर रोटियाँ बना लेती और यह सब खाना तीनों खाते हैं और पेट और भरने के लिए खूब पानी पी लेते हैं। एक माँ अपने बच्चों के लिए क्या-क्या कर नहीं सकती सब कुछ कर सकती है।

ट्रान्सपर्ट कंपनी की नौकरी छूट जाने के बाद श्यामलाल मारे-मारे भटकता है। लेकिन अंत में इधर-उधर दौड भाग करते-करते श्यामलाल को नजफगढ रोड की एक फॅक्टरी में दरबान की नौकरी मिल गयी थी। जिसने नौकरी दिलवाई थी,

उसने पचहत्तर रूपये में से पंद्रह रूपये माहवार अपने लिए तय कर लिए थे। इसी शर्त पर इतने बूढे और कमजोर आदमी को नौकरी मिली थी। यह एक तरह से देखा जाय तो आर्थिक शोषण ही है। श्यामलाल अब रात को घर भी नहीं रहते थे। उन्हें रात पाली पर ही जाना होता।

बीरन के सहारे जीनेवाले लोगों को कुछ मुआवजा मिलने के लिए बीरन की मौत मंजूर कर लेने के लिए हरबंस और तारा कोशिश करते हैं। तारा का यह कानूनी पेच था। मुआवजे के लिए अर्जी दी गई थी। इसीलिए पति-पत्नी का अलगाव दिखाना जरूरी हो गया था। इसी कारण श्यामलाल फैक्टरी वाली कोठरी में रूक गए थे और तारा ने अपनी माँ को अपने यहाँ रख लिया था। क्योंकि तारा को भी एक और हाथ की जरूरत थी। उसके पास पैसा भी इतना था कि वह आया रख सकती थी और हरबंस ने भी धीरे से सुझा दिया था। इसलिए एक दिन तारा ने बहुत अपनेपन से माँ से कहा था, "अम्मा, अब तुम यहाँ चली आओ··· मेरे पास रहो। वहाँ तुम अकेली रहती हो, तो बराबर मन में खटका बन रहता है।"[2]

यह सिर्फ दिखावा ही था। एक बेटी अपनी माँ की आर्थिक स्थिति बिगड जाने के कारण अपने यहाँ उसे आया के रूप में रखने के लिए तैयार हो जाती है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पैसा रिश्ते कैसे तोड़ देता है।

निष्कर्षतः लेखक ने "समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास में पाठकों के सामने आर्थिक समस्या को प्रस्तुत किया है। आज भी सामान्य लोगों के सामने आर्थिक कठिनाइयाँ हैं। इनके कारण उनकी हालत बड़ी अजीब-सी बन गयी है। कमलेश्वरजी ने अपने इस उपन्यास में आर्थिक दृष्टि से जर्जर श्यामलाल की मानसिकता को प्रस्तुत किया है। आज भी कई परिवारों में ऐसे श्यामलाल मिलते हैं जिन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक अभाव के कारण श्यामलाल के परिवार में बिखराव आता है। अपने परिवार को सुचारू ढंग से चलाने की वे बेहद कोशिश

तो करते हैं पर उनकी यह कोशिश नाकाम हो जाती है।

कमलेश्वरजी के "आगामी अतीत" उपन्यास में भी आर्थिक समस्या दिखाई देती है। आर्थिक समस्या का वास्तव चित्रण "आगामी अतीत" में हमें देखने को मिलता है।

कमलबोस दार्जिलिंग से कलकत्ता जाते समय चंदा को वादा करके गये थे कि डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद हम शादी करेंगे लेकिन वे चंदा को भूल गये। उन्हें मन ही मन लगने लगा कि मुझे एक खुबसूरत बीवी चाहिए। पैसा चाहिए····ऊँची रिश्तेदारी चाहिए···इन सारी प्रवृत्तियों के कारण वह स्वार्थी हो जाता है। इसी कारण वह चंद्रमोहन सेन नामक एक रईस की बेटी निरूपमा से शादी कर लेते हैं। लेकिन उसकी मृत्यू हो जाती है। यहाँ आर्थिक समस्या का प्रश्न ही नहीं उठता। कमलबोस का दोस्त प्रशांत भी इस बात से सहमत नहीं है। वह उसे बाद में याद दिलाता है और यह सब बातें कमलबोस को सच्ची लगी। प्रशांत कहता है अब चंदा का दुख मनाने से या पछताने से क्या फायदा ?

कमलबोस पच्चीस साल बाद चंदा की खोज करने के लिए जब दार्जिलिंग आते तब वहाँ उनका दोस्त प्रशांत उन्हें पिछले दिनों की याद दिलाता है। फिर कमलबोस को ऐसा लगने लगा प्रशांत ने जो कुछ कहा था, वह सब इस वक्त होता तो कुछ और ही होता, पर यह अतीत का काटा पानी नहीं माँग पाता। कमलबोस को मन-ही-मन ऐसा लगने लगा कि "अतीत की यात्रा में कौन साथ दे सकता है ? यह तो महायात्रा है जिस पर आदमी अकेला जाता है। औरों ने क्या किया, इससे ज्यादा यह सोचता हुआ कि खुद उसने औरों के साथ क्या किया। रह रह कर उन्हें चंदा की याद आती है।"[3]

चंदा की तलाश के लिए दार्जिलिंग से कमलबोस नीली-घाटी की ओर जा रहे थे उसी समय उनका मन हमेशा अतीत में उलझा रहता है। उसी समय निरूपमा, चंद्रमोहन सेन और रमेंद्र के काले कारनामों की याद आती है।

सामने से जब विद्यार्थी और लडकियाँ गुजर जाती हैं तो कमलबोस को बचपन की याद आती है। इनके घर की आर्थिक अवस्था भी खराब थी। कमलबोस के पिताजी युद्ध में मारे जाते हैं। अकेली उनकी माँ ही है। माँ ही कमलबोस की परवरिश किया करती हैं। वह जैसे-तैसे करके उन्हें पढ़ाती है। जिस मकान में वे रहा करते हैं, वह उनका अपना नहीं है। मामा की मेहरबानी की वजह से यह मकान उन्हें मिल गया है। उपर्युक्त दो उदाहरणों में शिक्षा समस्या, तथा रहने के लिए मकान की समस्या स्पष्टतः चित्रित की गयी है। कमलबोस की घर की हालत उन दिनों गिरी हुई है। माँ ही उसकी पढ़ाई का इंतजाम करती है। डॉक्टरी पढ़ने की कमलबोस की काफी दिलचस्पी रखते हैं। मगर इस मामले में माँ को खुलकर वह नहीं कह सकते। कमलबोस का दोस्त "प्रशान्त" अचानक एक दिन उसकी माँ को कहता है कि वह डाक्टरी करना चाहता है। माँ मारवाडी चेरिटेबल ट्रस्ट की मदद लेकर कमलबोस की डाक्टरी पढ़ाई का इंतजाम कर देती है। उपर्युक्त उदाहरण में प्रखरतः आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा की समस्या दिखाई देती है।

चंदा की भी आर्थिक स्थिति पहले से ही खूब खराब थी। पहले वह जड़ी-बूटी बीकती थी और बाद में वह सूत रंगने का काम भी करती है। उसके बारे में कमलबोस जब पूछताछ करते हैं तो लोग कहते हैं कि "उन जैसी औरत होनी मुश्किल है, बाबू। साक्षात् देवी थी। यहाँ, इसी कोठरी में रहती थी। नियम से किराया देती थी···गरीबों को दवा-दारू मुफ्त दे देती थी। वैदक उन्हें बहुत अच्छी आती थी।"[4] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह गरिब होते हुए भी स्वाभिमानी थी।

चंदा की बेटी चांदनी पर रेप होने पर वह सीधे चंपाबाई के कोठे पर चली जाती है। तब से वह एक वेश्या बन जाती है। कमलबोस जब उसकी

तलाश लेने के लिए दूबारा इस कोठी पर जाते हैं। तभी सीढियों पर कदमों की आहट हुई। सचेत होते हुए चाँदनी ने कमलबोस से कहा, "अच्छा अब तू जाता है कि नहीं। पिंड तो छोड़। जैसे-तैसे पेट पालते हैं हम लोग। क्यों पेट पर लात मारने चला आता है····?"[5]

चांदनी जब कमलबोस के साथ लॉन में बैठी थी, तो वह बोली थी, "तुम अपना पैसा यों ही खराब कर रहे हो ?"

"होने दो।"

"अच्छा, एक बात बताओ···तुम्हारे पास इतना पैसे कैसे हो गया?"[6]

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि चांदनी आर्थिक अभाव के कारण उसे बहुत ही ताज्जुब होता है।

कमलबोस के यहाँ चांदनी जब आती है तब वह कहती है मुझे यहाँ काहे के लिए ला बिठाया है? काम-धंधेवाली औरत हूँ····सीधे-सीधे अपना काम करो तो मेरा पैसा भी पटता जाये।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि "आगामी अतीत" उपन्यास में कमलेश्वरजी ने प्रेम समस्या और वेश्या समस्या के साथ-साथ आर्थिक समस्या का भी चित्रण किया है। कमलबोस को डॉक्टरी शिक्षा के लिए पैसे नहीं थे उसकी माँ कर्ज निकाल के डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करती तो इसमें नौकरी की भी समस्या को चित्रित किया गया है। चंदा नाम की जड़ी-बूटी बिकनेवाली एक युवती से कमलबोस प्यार करते थे और उसे वादा करके भी शादी नहीं

करते इसलिए प्रेम-समस्या भी चित्रित है। चांदनी वेश्या बनने का कारण अलग ही है लेकिन आर्थिक परिस्थिति भी उसे मजबूर कर देती है।

कमलेश्वरजी के "डाक बंगला" उपन्यास में भी असफल प्रेम का वर्णन है। इस उपन्यास में "इरा" एक ऐसी बदनसीब युवती है जिसने अपनी जिन्दगी में चार पुरूषों से प्रेम किया वे चार पुरूष मेजर सोलंकी, बतरा, डॉक्टर और विमल इनमें से एक ने भी इरा को अंत तक सच्चा प्यार नहीं दिया। सिर्फ उसके साथ खिलवाड ही करते रहे।

कश्मीर सफर के दौरान इरा की तिलक से मुलाकात हुई तब एक दिन इरा ने तिलक को अपना पुराना किस्सा बताया। उसी समय इरा को भी आर्थिक परिस्थिति का भी सामना करना पड़ा।

इरा के पति की मौत हुई थी। किसी विद्रोही ने उसको सरकारी अफसर समझकर गोली मार दी थी। इसलिए वह अपने लिए एक सहारा खोज रही थी। लेकिन यह सब अलग ही हो जाता है। यहाँ एक और भी समस्या पैदा हो जाती है वह है पुनर्विवाह की।

"विमल" वास्तव में इरा का सहपाठी था। वे दोनों एक दूसरे को चाहने भी लगे थे। इरा का नाटकों में काम करना पिताजी को बिल्कुल पसन्द नहीं है क्योंकि वह साल इरा की पढ़ाई का आखरी साल था। उसको दिल्ली ड्रामा कैम्पिटिशन जाने से उसके पिताजी ने मना कर दिया था। विमल को भी वह वचन दे चुकी थी। आखिर पिताजी के मर्जी के खिलाफ उसने कैम्पिटीशन में हिस्सा ले लिया। पिताजी से उसका रिश्तो टूट गया। इधर विमल और इरा दोनों दो साल तक दिल्ली में स्थायी रंगमंच स्थापित करने की जी तोड़ कोशिश करते रहें। लेकिन हाथ में आयी सिर्फ नाकामयाबी और निराशा तथा

कर्ज। उन दोनों के पास पैसों की कमी पड़ गयी। आखिर दोनों में दूरियाँ पैदा हो गयीं। आर्थिक अभाव के कारण यह सब हो गया।

ऐसी हालत में आखिर विमल ने इरा की नौकरी का प्रबन्ध कर दिया। बतरा साहब के फ्लैट में उसको नौकरी मिल गयी थी। काम था सिर्फ "टेलिफोन काल्स अटेण्ड करना।" जिसके लिए इरा को चार सौ रूपये तनख्वाह मिलती थी। फिर कुछ दिनों बाद शीला इरा को बतरा के यहाँ से नौकरी से हटा देती है। क्योंकि बतरा के साथ इरा का रहना शीला बर्दाश्त नहीं कर सकी। क्योंकि वह बतरा की पत्नी थी। उसने इरा को नौकरी से छुट्टी कर दी। फिर आर्थिक समस्या निर्माण हो गयी।

ऐसे में ही उसके जीवन में डॉ·चन्द्रमोहन आया था। इरा उसके बच्चों की परवरिश किया करती थी। उसके साथ वह विवाह कर देती है। विवाह के समय डॉक्टर की उम्र पचपन साल की थी। इससे और एक समस्या दिखाई देती है, वह है अनमेल ब्याह समस्या। पैसों के सिवा उसके पास कुछ नहीं था। इसलिए यहाँ आर्थिक समस्या का प्रश्न उठता ही नहीं।

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि कमलेश्वरजी ने "डाक बंगला" उपन्यास में प्रेम समस्या के साथ-साथ पुनर्विवाह की समस्या, अनमेल ब्याह समस्या तथा आर्थिक समस्या आदि समस्याओं को बड़े अच्छे ढंग से चित्रित किया है।

कमलेश्वरजी का "तीसरा आदमी" यह उपन्यास खास तौर से पति-पत्नी के बीच जब कोई तीसरा आदमी आता है तब जीवन असहय हो जाता है इसका ही चित्रण है। यहाँ आर्थिक समस्या बहुत ही कम रूप में दिखाई देती है।

"मैं" और "चित्रा" दोनों पति-पत्नी हैं। सुमन्त "मैं" का दूरदराज का भाई है। विवाह के कुछ दिनों बाद ही वे दोनों सुमन्त के यहाँ दिल्ली चले जाते हैं। "मैं" अच्छी नौकरी की तलाश में है मगर नौकरी मिल नहीं सकती। इसमें नौकरी है फिर भी अच्छी चाहिए, यह भी एक तरह से नौकरी की समस्या है। दिल्ली में सुमन्त का मकान छोटा था ऐसे में ही वे तीनों रहते थे। यह भी एक मकान की समस्या ही है। क्योंकि बड़े-बड़े शहरों में मकान नहीं मिलते इसलिए ऐसा रहना पड़ता है। यह एक मध्यवर्गीय लोगों की समस्या है। सुमन्त ने चित्रा को प्रूफ रीडिंग का काम सिखाया। वे दोनों आपस में प्रेम करते हैं। इसी कारण "मैं" के मन में शक की दीवार बढ़ती है। इसीलिए "मैं" के पास चित्रा रह नहीं पाती। कुछ दिन बीत जाने पर अपनी परवरिश के लिए चित्रा ने एक स्कूल में नौकरी स्वीकार कर ली। आर्थिक समस्या बड़े-बड़े शहरों में बहुत ही दिखाई देती है।

निष्कर्षतः इस उपन्यास में स्पष्ट किया है कि पति-पत्नी के बीच जब कोई तीसरा आदमी आता है तब घर की आर्थिक हालत बहुत ही बुरी हो जाती है। इसका चित्रण इसमें दिखाई देता है। फिर भी कहीं कहीं जगह पर आर्थिक समस्या भी दिखाई देती है।

कमलेश्वर का "लौटे हुए मुसाफिर" इस उपन्यास में साम्प्रदायिक समस्या का चित्रण दिखाई देता है। चिकवों की बस्ती कथावस्तु का मूलाधार है। इस बस्ती में रहनेवाले लोग हैं - नसीबन, सत्तार, साई, सलमा, बच्चन आदि। सिर्फ नफरत की आग ने इस बस्ती को जला दिया है। विभाजन के पहले इस बस्ती में न तो हंगामा था और न शोर। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही शान से जी रहे थे। धर्म के नाम पर उनमें कभी खून नहीं बहा। बहुत ही खुबसूरत बस्ती थी यह। अंग्रेजों के आने के कारण हिन्दू-मुसलमान

दोनों में भीतर-भीतर साम्प्रदायिकता की आग भड़क गई।

इस बस्ती के हिन्दू और मुसलमान दोनो अपने-अपने ढंग से जी रहे थे। मगर सलमा का पति मकसूद और यासिन जब इस बस्ती में आ जाते हैं तब इस खूबसूरत बस्ती में हंगामा खड़ा कर देते हैं। ये दोनों मिलकर नफ़रत की आग को भड़काते हैं। मुसलमान हिन्दुओं को नफरत की दृष्टि से देखने लगे और हिन्दू मुसलमानों की ओर नफरत की दृष्टि से देखने लगे। फिर पाकिस्तान बनने का ऐलान हुआ। मुसलमान खुश हो गये। जो रईस मुसलमान थे वे पाकिस्तान की ओर निकल पडे और जो गरीब थे मगर अमीर बनने के सपने लेकर पाकिस्तान की ओर निकल पडे फिर भी वे पाकिस्तान पहुँच नहीं पाये। यह सब किस कारण क्योंकि उनके पास वहाँ तक पहुँचने के लिए पैसे भी नहीं थे और पाकिस्तान जाकर गुजारा कैसे करे। इसलिए वे गरीब मुसलमान वापस लौटे। गरीब लोग अमीर बनने के सपने लेकर पाकिस्तान की ओर चल पडे थे, मगर आर्थिक अभाव के कारण पाकिस्तान पहुँच नहीं पाये।

सत्तार जब इस बस्ती में आया था तब सबसे पहले शहर में साई से उसकी मुलाकात हुई थी। वही से साई ही इस बस्ती में ले आया था। रास्ते में ही सत्तार ने कहा था -, "लगता है अब अपना पाकिस्तान बन जायेगा··· शायद एक बेहत्तर जिन्दगी मिले मुसलमानों को···यहाँ तो बड़ी गरीबी है न करने को काम है, न रहने को जगह।"[7]

हिन्दु-मुसलमान जब साम्प्रदायिकता की आग भड़क उठी तो उसी समय मुसलमानों को हमेशा ऐसा लगता था कि अपना पाकिस्तान बन जाय तो मुसलमानों को अच्छी जिन्दगी जीने को मिलेगी। यहाँ तो उन्हें ठीक तरह से काम भी नहीं मिलता और रहने के लिए जगह भी नहीं है।

एक दिन इलाहाबाद में हिन्दु-मुसलमानों का दंगा हो गया। उसी समय ये सब अपने को मजबूत बनाने में लगे हुए हैं।...मंजूर अली ने सात दूकानें भी निकाली थी। हिन्दु व्यापारियों ने अच्छे किराये पर उन्हें लेना चाहा था, पर मंजूर अली ने कम किराया लेना मंजूर किया था, पर दूकाने मुसलमानों को ही दी थी। क्योंकि मुसलमान मुसलमानों को मजबूत बनाने की कोशिश कर रहे थे। यह सब साम्प्रदायिक समस्या के कारण। यहाँ तो आर्थिक समस्या का प्रश्न उठता ही नहीं।

लेकिन हिन्दु-मुसलमानों में साम्प्रदायिक तनाव के कारण जो गरीब मुसलमान थे उनका आर्थिक शोषण बहुत बार हुआ। मस्जिद के नीचे बैठकर कबाब और पराठा बेचनेवालों ने जल्दी ही खोंचे उठा लिए थे। तनाव के कारण उनके पेट का सवाल पैदा हो गया था। गरीब लोग अपना पेट कैसा भर सकते इसका यह जीता-जागता उदाहरण है।

उसी शहर में इफ्तिकार टांगेवाले की भी यही हालत थी। रात को डाकखानेवाले अड्डे पर खडे इफ्तिकार को स्टेशन के लिए सिर्फ तीन सवारियाँ मुश्किल से मिली थी। चौथी सवारी के लिए वह तरसता ही रह गया पर नहीं मिली। यहाँ आर्थिक समस्या स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

इफ्तिकार मुसलमान है इसी शक के कारण उसके इक्के में कोई बैठते नहीं। इसी कारण उसका धंदा नहीं होता। यह समस्या हिन्दु-मुस्लिम साम्प्रदायिक समस्या के कारण गरीब इफ्तिकार को आर्थिक समस्या निर्माण हो गयी।

तब उसी समय इफ्तिकार सत्तार से कहता है "कुछ नहीं सत्तार, हम गरीब मारे जाएंगे...अपना वतन छोड़कर हम कहाँ जाएँगे? यहाँ पेट नहीं भरेगा तो क्या करेंगे ?"[8]

इफ्तिकार जैसे बहुत से गरीब लोग आर्थिक अभाव के कारण भूखे मरेंगे। अर्थ अभाव के कारण ये लोग दो जून की रोटी तक नहीं पा सकते इसको सच्चाई के साथ लेखक ने अभिव्यक्त किया है। धन का अभाव ही इन लोगों का जीवन अभावग्रस्त बनता है। उपन्यासकार ने यहाँ स्पष्ट किया है कि धन के अभाव में या अर्थ के अभाव में इस तरह कई लोगों की जिंदगी मायूस बन गयी है। इस उपन्यास नें साम्प्रदायिक समस्या के कारण आर्थिक समस्या भी किस प्रकार निर्माण हुई है इसका यथार्थ चित्रण हुआ है। हिन्दु-मुसलमान साथ-साथ हँसते खेलते थे, एक-दूसरे के दुख बँटा लेते थे यहीं एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। यह सब साम्प्रदायिकता के कारण। इसमें गरीब लोगों का आर्थिक शोषण किस प्रकार होता है, इसका चित्रण इस उपन्यास में कमलेश्वर ने किया है। यह उपन्यास वैसे देखा जाय तो हिन्दुस्तान के बँटवारे को लेकर लिखा गया है। इसमें सामान्य लोगों का आर्थिक शोषण किस प्रकार होता है यह दिखाने की कोशिश की है। बँटवारे की समस्या को चित्रित करते हुए कमलेश्वरजी आर्थिक समस्या को भी सामने रखते हैं।

यासीन ने साम्प्रदायिकता को भड़काने की कोशिश की। बँटवारे के दिनों में जो मुसलमान रईस थे, वे पाकिस्तान चले गये और जो गरीब थे उन्हें बहुत सी परेशानियाँ उठानी पड़ी।

कमलेश्वरजी का सबसे पहला उपन्यास "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में मैनपुरी कस्बे का सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। उन लोगों के सामने आर्थिक परिस्थिति कैसे निर्माण होती है यह हमें देखना बहुत जरूरी है। इसी के अंतर्गत वहाँ के लोगों की आशाएँ, निराशाएँ, दास-विलास, रूदन, प्रेम और तनाव, राजनीति आदि बहुत सारी

बातों का बड़ा ही संवदेनाजन्य चित्रण किया गया है।

बाजामास्टर की मजबूरी का चित्रण इस उपन्यास में देखा जा सकता है। आर्थिक अभाव के कारण बाजामास्टर एक मजबूर आदमी है। बाजामास्टर ड्रामा कंपनीयों में रहा, संगीत की टयूशने की, नौटंकीवालों के साथ भी रहा मगर कहीं भी जम नहीं पाया। बाजा मास्टर होकर भी आज उसकी न इज्जत, न मान सम्मान अगर वह संगीत की सभाओं में जाता तो उसकी कदर होती। अपनी कला को शिवराज के सामने प्रकट करते हुए कहता है- "सबसे बुरा यही लगता है कि लोग अजीब हिकारत से देखते हैं। आज बड़ी-बड़ी संगीत सभाओं में जाता तो कदर और होती, लेकिन यह सब अपने बस का नही, जब-जब यों ही घूमता फिरता हूँ, तब लगता है, यह सब बेकार है। न इज्जत, न पैसा, न दोस्त, न हमदर्द।...संगीत की टयूशने की, पर कहीं भी कुछ ऐसा नहीं मिला जिससे मन को संतोष मिलता। यार सब बेकार है।"[9]

पहले बाजामास्टर संगीत के गुरूजी थे मगर कन्या विद्यालय के अधिकारियों ने एक दूसरा सूरदास खोज लिया। बाजामास्टर की छुट्टी हो जाती है। याने कि वह बेकार हो जाता है।

डाकू मंगल का साथीदार गिरधारीलाल बंसिरी को परेशान करता है। उसके बाल खिंचता है, चीखता है "माल नहीं बताती तो इस लौंडिया को मोटर में डाल लो।"[10]

आर्थिक अभाव के कारण ये लोग इस तरह का बर्ताव करते हैं।

रंगीले भी प्रथम बड़ा लोकप्रिय था। लोगों में भी और पुलिस महकमें भी। वह अधिक पढ़ा-लिखा तो नहीं था लेकिन किसी के घर चोरी हो जाय, और चश्मदीद गवाह की जरूरत पडे तो रंगीले की मांग बढ जाती थी। उसको

इतना डिमांड था कि जो पहले आता था वह उसे रिझर्व कर लेता। उसे पैसों की कमी ही नहीं थी। वह कहा करता था "मैं तो पैसे का गुलाम हूँ, और सबसे बड़ा अपनाया···आदमी आदमी के काम आता है। मुझसे किसीका काम निकल जाए, समझो सुरग की एक सीढी चढी। बद्दुआ नहीं लेता···दुआ लेता हूँ, दुआ देता हूँ।"[11]

पुलिसवालों से जान-पहचान के कारण रंगीले निर्भय था। सरनाम यह बात जानता था, इसीलिए उसने रंगीले का साथ पकड़ा था।

लेकिन उन दिनों एक जज बहुत दिनों टिक गया। तब रंगीले की साख बिगड़ गई। रंगीले पेशेवर गवाह मालूम पड़ता है और उस जज ने रंगीले से कहा कि अगली बार तुम्हें गवाह की तरह न देखूं।

जब तक वह हाकिम रहा तब तक रंगीले को किसी ने भी पूछा नहीं और उन दिनों वह नौकरी भी छोड़ चुका था। आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब होती जा रही थी।

आर्थिक अभाव के कारण वह ऐसे काम करने लगा, जो कोई न कर पाए - जैसे महूक तोड़ना, कुएँ में गिरी हुई डोल-बाल्टी निकल देना, साँप पकड़ना आदि।

बेकारी के कारण चौराहे वाले शिव मंदिर के बाबा लोगों के साथ बैठा करता, गांजा की दम लगाता आदि बहुत सारी बुरी आदते उसे लगी।

बाजामास्टर की जब नौकरी छूटी तो नौकरी की समस्या निर्माण हो गई। इसका सबसे अधिक सदमा शिवराज को हुआ। अब उसके सामने

एक ही धुन थी - एक नाटक मंडली । शिवराज सहारा देते हुए कहता है नाटक मण्डली बन सकती है। उसी समय बाजामास्टर शिवराज से कहते हैं - लीला कहती थी, मैं ठीक हो जाऊँ तब हम दोनों मिलकर चला लेंगे नाटक कम्पनी। पर वह लाचार थी, वेश्या थी। लीला कहती थी, तुम इतना अच्छा बजाते हो फिर कोई नहीं आता। और मैं उसकी हताश प्रशंसा का जवाब देता था, "तुम इतना अच्छा गाती हो, फिर भी कोई नहीं आता।" तभी से उसने सोचा था हम नाटक कंपनी भी खोल सकते हैं। उसी समय वह कहता है, रूखा-सूखा खा लूंगी पर यह व्योपार नहीं करूँगी, और कौन-सा धंधा है हमारे लिए····लेकिन वह हार गई - एक तरफ भूख और दूसरी तरफ मौत खड़ी थी। उसने तन का सौदा करके जिन्दगी को ही चुनना मंजूर किया। क्या बुरा किया उसने शिवराज।"[12]

प्रस्तुत उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि लीला जैसी औरत अपना पेट भरने के लिए तन का सौदा करना चाहती है। आज भी ऐसी बहुतसी औरतें है, जो तन का सौदा करके अपनी जिन्दगी बिता रही हैं।

बंसिरी भी शिवराज से यही कहती है कि जैसे भी हो अपने को अलग कर लो। इन लोगों की मण्डली से पढ़-लिख लिया है, तुम्हें कुछ और करना है। जजी-कलेक्टरी में नौकरी की तलाश करो। शिवराज पढ़ा लिखा है फिर भी सरनामसिंह का दोस्त बनने के कारण वह बिगड़ जाता है।

इस उपन्यास में उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों का आर्थिक शोषण करते हैं इसका यथार्थ चित्रण लेखक ने किया है।

डॉ·लालचंद सरनाम से कहते हैं कि इतनी बड़ी ताकद होते हुए भी हमारे जिले में एक भी मोटर युनियन नहीं है। वे कहते हैं कि एक कर्मचारी

युनियन बन जाए, मोटर मालिक युनियन मालिकों ने अपने स्वार्थों के लिए बनी रखी है और असली काम करनेवाले बिखरे हुए हैं। जितना कमा लिया जाता है उतना पैसा नहीं मिलता। यह एक तरह का आर्थिक शोषण ही है। मजदूर और मालिक का झगड़ा इसी कारण शुरू है। मुश्किल यह है कि मजदूर संगठित नहीं होते इसीलिए उनका शोषण होता है।

यहाँ सब जीने के लिए संघर्ष कर रहें हैं। मालिक और मजदूर, वकील और मुहर्रिर, दुकानदार और नौकर सभी एक नांव में हैं, और उस नाव के चारों तरह का तूफान उमड़ रहा है।"

अस्पताल के डाक्टर भी गरीबों के लिए मिलनेवाले इंजेक्शनों को बेच लेते हैं, और दवाओं में पानी मिलाकर रोग का इलाज करते हैं। इस तरह का शोषण बहुत से लोग करते हैं।

जगमोहन तिवारीजी को स्कूल कमेटी के लोग पूरी तनख्वाह नहीं देते। सौ देते हैं, एक सौ पचास की रसीद लेते हैं। आर्थिक स्थिति अभावग्रस्त जरूरतमंदे को यह स्वीकार करना पड़ता है क्योंकि न करें तो बाल-बच्चे कहाँ से पालें ?

अंत में जब रंगीले को तीन साल की सख्त कैद हो जाती है। तब उसी समय उसकी पत्नी बंसिरी के पेट में बच्चा था। तब रंगीले शिवराज से कहता है, "भगवान की यही मर्जी थी परबश हो गया मैं तो। भइया, जरा उसका खयाल रखना, अस्पताल में देखभाल रखना, तुम्हारे उपर ही छोडे जाता हूँ उसे, जरूरत पडे तो उसका एकाध जेवर बेच लेना, पर गडबड न हो पाय....।"[14]

प्रस्तुत उदाहरण से रंगीले की आर्थिक स्थिति का दयनीय चित्र लेखक ने चित्रित किया है। लेखक अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहता है- "इन धर्म मंडलियों से लड़िये डाक्टर साहब, जो यहाँ के मजदूरों को सोचने-समझने का मौका नहीं देती, इन ओझा और पाखंडियों से लड़िये जो आदमी नहीं बनने देते। मंडीवालों से लड़िए जो मुनाफे के लिए बरसात में गल्ले का गोदामों में बंद करके बाहर भेजने के लिए रोक रखते हैं। जिला बोर्ड, चुंगी के अफसरों से लड़िये जो बदमाशी करते हैं।"[15]

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि निम्न-मध्य वर्ग के लोगों का आर्थिक शोषण किस तरह होता है इसका यथार्थ चित्रण लेखक ने किया है। शिवराज, रंगीले, बाँसिरी, बाजामास्टर और सरनामसिंह की अपनी-अपनी समस्याएँ हैं, जिसका यथार्थ चित्रण कमलेश्वरजी ने यथार्थ रूप में किया है।

4·3 राजनीतिक समस्याएँ :-

"काली आँधी" कमलेश्वरजी का एक सफल लघु उपन्यास है। इसमें एक असफल दाम्पत्य की करुण कहानी का चित्रण है। यह उपन्यास आकार से छोटा होते हुए भी जीवन के विशाल दृष्टिकोण इसमें दिखाई देता है। आज के जीवन में भ्रष्टाचार और राजनीति ने इस प्रकार प्रवेश किया है कि कहीं पर भी चाहते हुए भी सामान्य व्यक्ति उससे मुक्ति नहीं पाता। "काली आँधी" में राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ को बहुत ही महीनता से प्रस्तुत किया है।

"काली आँधी" की नायिका है "मालती"। "मालती" जब राजनीति में प्रवेश करती है, तब उसे अभूतपूर्व सफलता मिलती है। मालती पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतीक है जो अपने हित और स्वार्थ के लिए आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्ग का शोषण करती है और उन्हें बार-बार बहकाती है। गरीब

लोगों की कमजोरी का जितना हो सके फायदा उठाती है।

राजनीति में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करनेवाली मालती अपने ही जीवन में किस प्रकार असफल हो जाती है इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में किया है।

जग्गी बाबू को राजनीति बिल्कूल पसंद नहीं है। वे कहते हैं राजनीति बड़ी घटिया चीज है। ज्यादा तर जग्गी बाबू राजनीति बातों को टाल देते हैं। यह संवाद भी दृष्टव्य है, जो राजनीति के बारे में थोडे शब्दों में पूरी स्थिति का खुलासा कर देता है।

"तुम लोग सिर्फ चीजों का बखूबी इस्तेमाल करना जानते हो।··· बाढ़ आयी तो उसे इस्तेमाल करो, सूखा पड़ा तो उसे इस्तेमाल करो, कहीं कोई लड़की भाग गयी तो उसके भागने का इस्तेमाल करो···कहीं कोई मर गया तो उसकी मौत का इस्तेमाल करो···तुम लोगों ने आदमी के आँसूओं और जजबातों तक को नहीं छोडा···उसकी आशाओं और सपनों को नहीं बख्शा।[16] ····तुमने उसके सपनों को नारे बना कर निचोड लिया। अब क्या बचा है आदमी के पास ?"

मालतीजी एक धमाके के साथ राजनीति में आई। पहला चुनाव उन्होंने म्युनिसिपल बोर्ड कमेटी का लडा···हंगामा बहुत हुआ। पहली बार मालतीजी ने घर के बाहर कदम रखा तो जग्गी बाबू खुश थे। वे हमेशा कहते थे कि औरतों को भी आगे आना चाहिए। लेकिन पहली बार जब मालतीजी जीति तो शहर की जनता ने उनका स्वागत समारोह किया। फिर जिला परिषद वाला चुनाव जीतने पर भी स्वागत हुआ। उसी समय जग्गी बाबू जब मंच पर चढ़ने लगे थे तो एक वालिंयटर ने उन्हें रोक लिया था। वे अचकचाकर

बोले, "अरे भाई, मैं, मैं, मालती जी का····, वालिंयटर ने अपने जोम में जवाब दे दिया था, हां हां, यहाँ सभी मालतीजी के घरवाले ही हैं। हटिए··· नीचे उतरिए।" जग्गी बाबू बहुत ही अपमानित हुए।

जग्गी बाबू को ऐसा लगा कि सफल होने वाले के चारों तरफ कैसे मजमा जुटता है और सही लोग कैसे उससे दूर होते जाते हैं। तब से वे अपना सारा वक्त खजुराहों वाले होटल पर ही गुजारने लगे थे। अफवाहें फैली थी कि जग्गी बाबू ने अपनी बीवी को औरों के लिए छोड दिया है···आखिर पैसा बनाने के लिए कुछ तो करना पडेगा···यह साला अपनी बीवी को दांव पर लगा बैठा है।

वहाँ से आगे जग्गी बाबू ने अपनी बेटी लीला को अनाथाश्रम में रख दिया।

मालती जब राजनीति में प्रवेश करती है, तब उसे अभूतपूर्व सफलता प्राप्त होती है। राजनीति में उसने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। सफलता के चरमबिन्दु पर वह पहुँच जाती है। राजनीतिक जीवन में तो उसे सफलता जरूर मिली मगर पारिवारिक जीवन में असफलता ही मिली।

सामाजिक यश, प्रतिष्ठा और कीर्ति मिल गयी लेकिन इन सबने मिलकर मालतीजी को परिवार से ही तोड़ दिया। इतना ही नहीं तो उसे अपनी बेटी और बेटे से भी अलग होना पड़ा। सफलता के उच्च से उच्चतर शिखर पर पहुँचने के अन्तराल में वह अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह नहीं कर पाती है। वह अपने परिवार से विमुख हो जाती है। लेकिन इसका अभाव उसे एकांत के क्षणों में सालता अवश्य है। राजनीति कितनी घिनौनी, स्वार्थयुक्त, झूठ और फरेब के धरातल पर उपस्थित रहती है, राजनीति कितनी

क्रूर और यातनादायक होती है इसका अनुभव जग्गी बाबू लगातार करते हैं और राजनीति के प्रति उनके मन में घृणा पैदा हो जाती है। राजनीति के घृणित और अपमानजनक वातावरण से संत्रस्त उपन्यास के नायक जग्गी बाबू की यातनामयी मनःस्थिति स्वाभाविक प्रतीत होती है।

"मैं नहीं चाहता कि मेरी बच्ची आपकी जालिम पालिटिक्स का शिकार हो जाये···कल को कोई उठकर यह भी कह सकता है कि यह मेरी बच्ची नहीं है····आपकी दुनिया का जमीर मैं खूब समझता हूँ। मैं आपकी बच्ची को आपकी गलीज दुनिया से दूर रखना चाहता हूँ···"[17] प्रस्तुत कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि जग्गी बाबू बेटी लिली को राजनीति से दूर रखना चाहते हैं।

एक बार होटल गोल्डन सन के लॉन में शहर की नागरिकों की ओर से मालतीजी के लिए अभिनंदन-समारोह आयोजित किया गया था उसी समय स्कूली बच्चे मालतीजी को गुलदस्तें भेंट कर रहे थे। ऐसे में ही लिली बेधडक मंच पर चली गयी थी और उसने मालतीजी का ऑटोग्राफ लिया। मालतीजी ने उसका गाल भी थपथपा दिया था जैसे वह अन्य स्कूली बच्चों के थपथपाती। राजनीति के कारण एक माँ अपनी बेटी को पहचान नहीं सकी।

एक दिन मालती जग्गी बाबू के यहाँ चली जाती है, तो जग्गी बाबू कहते हैं अच्छा हुआ तुम आ गई। एक दिन लिली के सामने मुझे सब साफ करना था। इसे बताना था कि तुमने इसे जन्म तो दिया है, पर तुम इसकी माँ नहीं हो।

मालती इस पर बहुत पछताती है। जग्गी बाबू कहते हैं, हां मालती, पछताने में कुछ नहीं रखा है, जीतनेवाला तो जीतता ही है, हारनेवाला भी

एक दिन जीत जाता है···लेकिन पछतानेवाला हमेशा पछताता ही रह जाता है।

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि राजनीति की दृष्टि से देखा जाय तो कमलेश्वर का यह सफल उपन्यास है।

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में भी गौण रूप से क्यों न हो, लेकिन राजनीतिक समस्या लेखक ने अवश्य चित्रित की है। रंगीले जानता था कि चतुरी लुहार कांगरेस वालों के साथ उठता-बैठता है, चुनाव के जमाने में दो बैल वाला बिल्ला लगाकर दौड-धूप कर रहा था। कम्युनिस्ट-कांग्रेस विवाद यह भी एक राजनीतिक समस्या है।

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में गौण रूप से क्यों न हो फिर भी कम्युनिस्ट कांग्रेस विवाद की समस्या दिखाई देती है।

4·4 निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः कमलेश्वरजी ने अपने "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" से लेकर "आगामी अतीत" तक अपने उपन्यासों में आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं का भी चित्रण किया है। खास तौर से देखा जाय तो कमलेश्वर का "काली आँधी" उपन्यास में राजनीतिक समस्या दिखाई देती है। मालतीजी राजनीति में हमेशा सफल होती है लेकिन पारिवारिक जीवन में अंत तक असफल ही दिखाई देती है। आर्थिक अभाव के कारण निम्न मध्यवर्ग के लोगों को बहुतसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कमलेश्वरजी के "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "लौटे हुए मुसाफिर", "आगामी अतीत" और "समुद्र में खोया हुआ

आदमी" आदि उपन्यासों में कहीं न कही कारणवश आर्थिक समस्या दिखाई देती है।

प्रस्तुत उपन्यासों में आर्थिक तथा राजनीतिक समस्या को ध्वनित किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने कस्बाई जिन्दगी के संबंधित आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं का सच्चाई के साथ चित्रित किया है। इन सारी समस्याओं को चित्रित करना लेखक का उद्देश्य रहा है।

संदर्भ

1· कमलेश्वर / समुद्र में खोया हुआ आदमी / पृ·10

2· कमलेश्वर / समुद्र में खोया हुआ आदमी / पृ·101

3· कमलेश्वर / आगामी अतीत / पृ·50

4· कमलेश्वर / आगामी अतीत / पृ·64

5· कमलेश्वर / आगामी अतीत / पृ·76

6· कमलेश्वर / आगामी अतीत / पृ·88

7· कमलेश्वर / लौटे हुए मुसाफिर / पृ·45

8· कमलेश्वर / लोटे हुए मुसाफिर / पृ·94

9· कमलेश्वर / एक सड़क सत्तावन गलियाँ / पृ·16

10· कमलेश्वर / एक सड़क सत्तावन गलियाँ / पृ·36

11· कमलेश्वर / एक सड़क सत्तावन गलियाँ / पृ·45

12· कमलेश्वर / एक सड़क सत्तावन गलियाँ / पृ·54

13· कमलेश्वर / एक सड़क सत्तावन गलियाँ / पृ·73

14· कमलेश्वर / वही / पृ·117

15· कमलेश्वर / वही / पृ·73

16· कमलेश्वर / काली आँधी / पृ·4

17· कमलेश्वर / काली आँधी / पृ·6